सपनों की राजधानी दिल्ली

HIN-527

स्नातकोत्तर कला (हिंदी प्रथम वर्ष)

सायली नाईक

अनुक्रमांक: 23P0140022

PR NUMBER: 202005233

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

अनु.क्र	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	3
2	दिल्ली क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा	4-17
3	निष्कर्ष	18

प्रस्तावना

इस प्रकल्प में मैंने हमारी दिल्ली यात्रा का वरनाना किया है। दिल्ली एक सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक जगह है जहां हमें अनेक दर्शनीय स्थल देखने को मिलते है। दिल्ली भारत की राजधानी ही नहीं भारत का दिल भी है। यह यमुना नदी के तट पर बसा हुआ।

दिल्ली क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

हमारे विश्वविद्यालय ने दिल्ली अध्ययन यात्रा का आयोजन 18 से 26 मार्च 2024 तक किया था। हम सभी हमारी जाने की तैयारी करके 18 मार्च को दिल्ली जाने के लिए निकले। हम मडगांव रेल्वे स्टेशन पर मिलने वाले थे। मै दोपहर को घर से ठीक 1 बजे निकली। हमारी ट्रेन दोपहर 3.40 के आसपास थी लेकिन कुछ कारणवश वह 4.45 के करीब मडगांव रेल्वे स्टेशन पहुंची। हम दिल्ली के लिए गोवा एक्सप्रेस ट्रेन से निकले। ट्रेन लगभग 5 बजे मडगांव से निकली। सफर में हमने कई गांव, शहर और वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का भी नजारा देखा। हमें दिल्ली जाने लिए 2 दिन लगे और तीसरे दिन 20 मार्च को हम दिल्ली स्टेशन पर सुबह 6 बजे पहुंचे। फिर बाद में 10 बजे हम होटल में पहुंचे, वहाँ आराम किया। उसी दिन शाम को हम अक्षरधाम मंदिर गए। दिल्ली में बना स्वामी नारायण अक्षरधाम मंदिर एक मनोहर स्थान है। इसे भगवान स्वामी नारायण की स्मृति में बनवाया गया है। अक्षरधाम मंदिर को गुलाबी, सफ़ेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर में नक्षीदार खंबे, अलंकृत गुंबद और अनेक मूर्तियाँ भी शामिल है। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है। मंदिर में रोजाना शाम को दर्शनीय फव्वारा शो का आयोजन भी किया जाता है। यह मंदिर हजारों वर्षों की संस्कृतिक विरासत को उजागर करता है। मंदिर में प्रवेश करते ही हमें भगवान स्वामीनारायण की अद्भुत सोने की प्रतिमा दिखाई देती है। यहाँ हमें आकर्षक वास्तुकला का दर्शन होता है। अक्षरधाम मंदिर की स्थापना 6 नवंबर 2005 में हुई थी। यहां जाने पर हमें एक दिव्य भक्ति, पवित्रता और शांति का आभास होता है। यहाँ हम भारत के पौराणिक सभ्यता को देख सकते है। यह एक सुंदर और शांतिपूर्ण स्थान है। अक्षरधाम मंदिर में लगभग 20,000 मूर्तियाँ है। यहाँ पर हर एक कारीगरी एक देवता के दर्शन कराते है या भगवान स्वामीनारायण के जीवन की घटना को दर्शाते है। पृथ्वी पर अपने जीवित काल में भगवान स्वामीनारायण के द्वारा

उपयोग में लाई हुई वस्तुओं का दर्शन भी हमें गर्भगृह के पीछे दर्शन के लिए संरक्षित की गई नजर आती है। गर्भगृह के चारों ओर सीता-राम, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण, शिव-पार्वती आदि देवताओं का भी दर्शन होता है। अक्षरधाम मंदिर के आंतरिक भाग को नौ मंडप या विषयगत स्थानो में विभाजित किया गया है। ये नौ मंडप जटिल नक्षीदार मूर्तियों और स्तंभो से भरे हुए हैं और अद्वितीय गुंबदों और छत से ढके हुए है। पारंपरिक पत्थर से बने मंदिर के बाहरी हिस्से को मंडोवर के नाम से जाना जाता है। इसमें हिंदू धर्म के कई महान ऋषियों, साधुओं, भक्तो, आचार्यों और अवतारों की 200 मूर्तियाँ हैं। अक्षरधाम मंदिर नारायण सरोवर से घिरा हुआ है, जो एक झील है। झील के पास 108 गोमुख है जो 108 हिंदू देवताओं का प्रतिनिधित्व करते है। अक्षरधाम मंदिर में एक अति सुंदर उद्यान भी है जिसे लोटस गार्डन कहा जाता है जिसका नाम उसके आकार के कारण पड़ा है। अक्षरधाम मंदिर का दृश्य संध्या के समय मनमोहक लगता है और इसकी सजावट बहुत सुंदर लगती है।

दूसरे दिन 21 मार्च 2024 को चाय-पान होने के बाद हम ठीक 9 बजे होटल से निकले और इंडिया गेट गए। इंडिया गेट हमारे देश के इतिहास को दर्शाता है। इसे पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के नाम से भी जाना जाता है। इस युद्ध स्मारक पर शहीद भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाती है। इंडिया गेट को 80,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया था जिन्होने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। इंडिया गेट दिल्ली के राजपथ पर स्थित है। यह स्मारक प्रथम विश्व युद्ध और अफ़गान युद्ध में मारे गए भारतीय जवानों की याद में 1931 में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत लाल पत्थर से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पे खड़ी है। इसकी दीवारों पर 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए है, जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इंडिया गेट की नींव 1921 में ड्यूक ऑफ केनोट ने राखी थी और इसे कुछ साल बाद तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। इंडिया गेट के ताल पर एक अन्य स्मारक, अमर जवान ज्योति है, जिसे स्वतंत्रता के बाद जोड़ा गया था। यहाँ निरंतर एक ज्वाला जलती है जो उन अंजान सैनिकों की याद में है जिन्होने इस राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुती दी थी। इस भव्य संरचना के चारो ओर हम हरा-भरा वातावरण देख सकते है। वहाँ अनेक प्रकार के फूलों के पौधे भी हमें दिखाई देते है।

उसके बाद हम वाद्य-यंत्र संग्रहालय (Gallery of musical instruments) में गए थे। वहाँ पर भारत के हर एक प्रदेश के वाद्य-यंत्रो को संग्रहीत किया गया है। इससे हमारी प्राचीन संस्कृति का इतिहास हमें नजर आता है। यह वाद्य-यंत्र संग्रहालय संगीत नाटक अकादमी की देखरेख में पिछले 52 वर्षों से भारत के सांगीतिक धरोहर को संभालने का काम करता है। यहाँ भारत की संगीत विरासत के कुछ सबसे बड़े और अल्पज्ञात रत्न यहा मौजूद है। संगीत वाद्य-यंत्रों की गैलरी, जिसे 'असावरी' भी कहा जाता है, का उदघाटन 1964 में प्रसिद्ध वायलिन वादक लॉर्ड येहूदी मेनुहिन द्वारा किया गया था। यहाँ हमें कछवा सितार (उत्तर प्रदेश), गेट्टू वाद्यम (तमिलनाडू) सहित दुर्लभ वाद्ययंत्रों के संग्रह भी मिलते है। वहाँ हमने गोवा में प्रयुक्त वाद्य जैसे कासाले, घुमट आदि वाद्य भी देखे। जम्मू कश्मीर का 'संतूर' नामक भी वाद्य देखा।

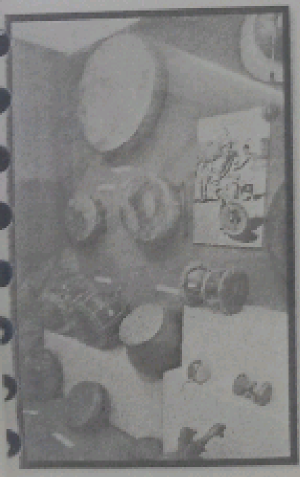

यहा से फिर दोपहर 3 बजे के आसपास हम लोटस टेंपल गए। लोटस टेंपल या कमल मंदिर दिल्ली के नेहरू प्लेस के पास स्थित एक बहाई उपासना स्थल है। यह एक अद्भुत मंदिर है। यहा पर न कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार का कोई धार्मिक कर्मकांड किया जाता है और यहा कोई धार्मिक प्रतीक भी नहीं है। यहाँ जाने के बाद हमें दो जगत का अनुभव देखने को मिलता है जहां उस टेंपल के बाहरी आवरण में शोर मचा हुआ है और अंदर जाते ही शांत वातावरण का चित्र हमें देखने को मिलता है। यह भौतिक पूर्वाग्रहों से दूर रहकर सभी में समानता लाता है। मंदिर का उदघाटन 24 दिसंबर 1986 को हुआ लेकिन लोगों के लिए यह मंदिर 1 जनवरी 1987 को खोला गया। इसकी कमल सदृश आकृति के कारण इसे कमल मंदिर या लोटस टेंपल कहा जाता है। इस मंदिर की आकृति कमल की पंखुड़िया खुल रही है इस आकार में दिखता है। कमल पवित्रता तथा शांति का प्रतीक है बहाई उपासना मंदिर उन मंदिरों में से एक है जो गौरव, शांति एवं उत्कृष्ठ वातावरण को ज्योतिर्मय करता है, जो किसी भी श्रद्धालु को आध्यात्मिक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए अति आवश्यक है। यह मंदिर एक धर्म तक सीमित नहीं रहा है। मंदिर का स्थापत्य वास्तुकार फरीबर्ज सहबा ने तैयार किया है। बहाई समुदाय के अनुसार ईश्वर एक है किन्तु उसके रूप अनेक हो सकते है। इसीलिए इस मंदिर में किसी भी देवता या ईश्वर की प्रतिमा देखने को नहीं मिलती।

इसके बाद शाम को हमने हुमायूँ का मकबरा देखा। हम यह बात जानते है की दिल्ली में बहुत लंबे समय तक मुगल शासन रहा है। प्रवेश करते समय हमें वहा के प्राकृतिक सौन्दर्य का दृश्य नजर आता है और वाहा से यह मक़बरा रम्य और मनोहर लगता है। यह मुगल वास्तुकला से प्रेरित मक़बरा स्मारक है। यह नई दिल्ली में स्थित है। यहा मुख्य इमारत मुगल सम्राट हुमायूँ का मक़बरा है और इसमें हुमायूँ की कब्र और कई अन्य राजसी लोगों तथा उनके परिवारवालों की भी कब्रें है। यह मक़बरा हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानो बेगम के आदेशानुसार 1562 में बना था। इस मकबरे का निर्माण 1570 में हुआ था। इस भवन के वास्तुकार सैयद मुबारक इब्न मिराक घियाथुद्दीन एवं उसके पिता मिराक घियाथुद्दीन थे जिन्हें अफगानिस्तान के हेरात शहर से विशेष रूप से बुलवाया गया था। इस मकबरे की वास्तुकला तथा उसके रूपरचना को देखकर हम इन वास्तुकारों की बुद्धिमता का अंदाजा लगा सकते है। उन्होने इसे एक सुंदर तथा आकर्षक रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य निभाया है। यह मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई। यहाँ सर्वप्रथम लाल बलुआ पत्थर का इतने बड़े स्टार पर प्रयोग हुआ था। यमुना नदी के किनारे मकबरे के लिए इस स्थान का चुनाव इसकी हज़रत निज़ामुद्दीन (दरगाह) से निकटता के कारण किया गया था। संत निज़ामुद्दीन दिल्ली के प्रसिद्ध सूफी संत हुए हैं और इन्हे दिल्ली के शासकों द्वारा काफी माना गया है। हुमायूँ की कब्र के लावा उसकी बेगम हमीदा बानो तथा बाद के सम्राट शाहजहां के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह और कई उत्तराधिकारी मुगल सम्राट जहांदर शाह, फर्रूखशियार, रफी उल-दरजत, रफी उद-दौलत एवं आलमगीर द्वितीय आदि की कब्रें स्थित है। मकबरे का निर्माण हमीदा बानो बेगम की आदेशानुसार हुमायूँ की मृत्यु के 9 वर्ष उपरांत आरंभ हुआ था। मुख्य इमारत के ईवान पर बने सितारे के समान ही एक छः किनारों वाला सितारा मुख्य प्रवेश द्वार की शोभा बढ़ाता है। मकबरे का निर्माण मूलरूप से पत्थरों को गारे-चुने से जोड़कर किया गया है और उसे लाल बलुआ पत्थर से ढंका हुआ है। मकबरे का विशाल मुख्य गुंबद भी श्वेत संगमरमर से ढंका हुआ है। इस चबूतरे की नींव में 56 कोठरियाँ बनी हुई है, जिनमें 100 से अधिक कब्रें बनाई हुई हैं। बाहर से यह सरल दिखने वाले मक़बरे की आंतरिक योजना कुछ जटिल है। इसमें

मुख्य केंद्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं। गुंबद के नीचे मध्य में आठ किनारे वाले एक जालीदार घेरे में द्वितीय मुगल सम्राट हुमायूँ की कब्र बनी है। सम्राट की असली समाधि ठीक नीचे आंतरिक कक्ष में बनी है, जिसका रास्ता बाहर से जाता है। मुख्य कक्ष में संगमरमर की जालीदार घेरे के ठीक ऊपर मेहराब बना है, जो पश्चिम में मक्का की ओर बना है। इसमें बहुत से भारतीय स्थापत्यकला के घटक देखने को मिलते हैं, जैसे मुख्य गुंबद को घेरे हुए राजस्थानी स्थापत्य कला की चोटी छतरियाँ, जो मूल रूप से नीली टाइल्स से ढंकी हुई थी। मकबरे को घेरे हुए चारबाग है। यह उसे एक शाही अंदाज देता है। चारबाग उद्यान के बीच तालाब में हमें मकबरे का सुंदर प्रतिबिंब दिखाई देता है। हुमायूँ का मक़बरा मुगल कालीन स्थापत्य का एक प्रतीक है तथा वहाँ की कारिगिरी को देखते हुए हमें मुगल तथा थोड़े अंश में भारतीय स्थापत्यकला का भी दर्शन होता है। 1993 में मकबरे को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रित रूप है। मकबरे को घेरे हुए चारबाग है। यह उसे एक शाही अंदाज देता है। चारबाग उद्यान के बीच तालाब में हमें मकबरे का सुंदर प्रतिबिंब दिखाई देता है। हुमायूँ का मक़बरा मुगल कालीन स्थापत्य का एक प्रतीक है तथा वहाँ की कारिगिरी को देखते हुए हमें मुगल तथा थोड़े अंश में भारतीय स्थापत्यकला का भी दर्शन होता है। 1993 में मकबरे को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रित रूप है।

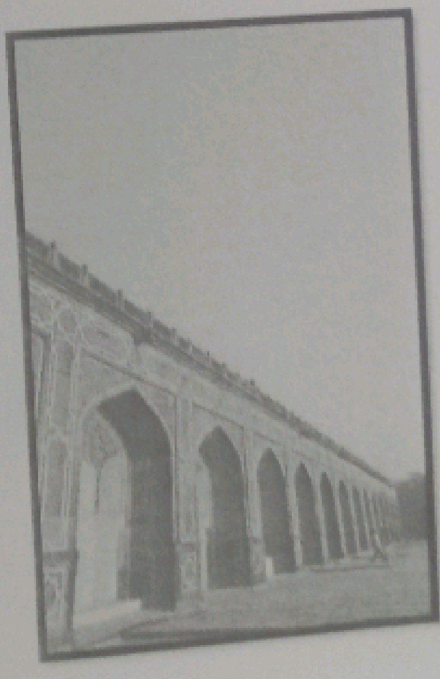

यहाँ से हम फिर 7 बजे दिल्ली के लक्ष्मीनारायण मंदिर में गए थे। लक्ष्मी नारायण मंदिर बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरो में से एक है। इसका निर्माण 1938 में हुआ था। इस मंदिर का बाहरी हिस्सा सफ़ेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर से बना है। इस मंदिर परिसर में हमें कई अन्य देवताओं की प्रतिमाएँ भी देखने को मिलती है। इस मंदिर में कई संत जैसे कबीर, मीराबाई आदि के पद भी कोरे हुए देखने को मिलते है। इस मंदिर का उदघाटन महात्मा गांधी ने किया था। यह मंदिर अपनी खूबसूरत वास्तुकला के लिए अदभुत दिखता है। मंदिर की दीवारों पर वेदों और अन्य पवित्र ग्रंथो के श्लोक और कहावतें लिखी हुई है। यहाँ हमें शिव, श्रीकृष्ण आदि देवताओं की मूर्ति भी देखने को मिलती है। यह मंदिर उडियन शैली से निर्मित है।

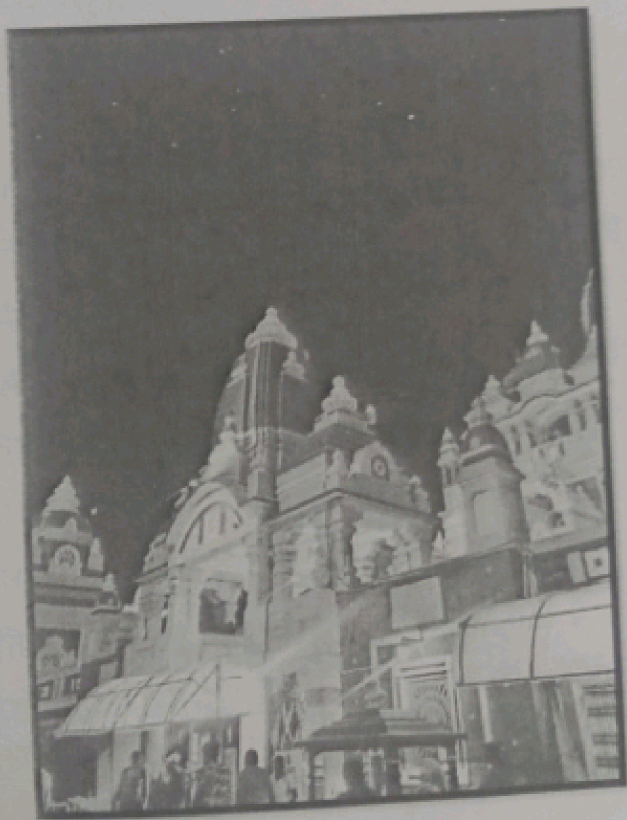

तीसरे दिन 22 मार्च 2024 को सुबह हम पहले दिल्ली विश्वविद्यालय में गए। दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना 1922 में केंद्रीय विधान सभा के अधिनियम द्वारा की गई थी और इसे विश्वविफयालय अनुदान आयोग द्वारा एक उत्कृष्ठ संस्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है। दिल्ली विषविद्यालय दुनिया के सबसे बड़ी विश्वविद्यालय प्रणालियों में से एक है। भारत के उपराष्ट्रपति विश्वविद्यालय के चांसलर के रूप में कार्य करते है। इसके बाद हम साहित्य अकादेमी मे गए थे। भारत की साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य के विकास के लिए सक्रिय कार्य करने वाली राष्ट्रीय संस्था है। इसका गठन 12 मार्च 1954 को भारत सरकार द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं और भारत में होनेवाली साहित्यिक गतिविधियों का पोषण और समन्वय करना है। यहाँ हमे अनेक भारतीय भाषाओं के साहित्यिक रचनाएँ देखने को मिलती है। इसके बाद हमने हिंदू कॉलेज देखा। हिंदू कॉलेज भारत के कुछ सबसे पुराने व प्रसिद्ध महाविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना 1899 में हुई थी। यह दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। 1899 में स्थापित, यह भारत में कला और विज्ञान के लिए सबसे पुराने कॉलेज में से एक है। हिंदू कॉलेज भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बौद्धिक और राजनीतिक बहस का केंद्र था। 1942 में गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन के जवाब में, कॉलेज ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस कॉलेज के कुछ शिक्षकों और छात्रों ने गिरफ्तारी दी। यहाँ से हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में गए थे। इसकी स्थापना 1969 के संसद के एक अधिनियम द्वारा हुई थी। यहाँ अनेक प्रदेशों से छात्र-छात्राएँ पढ़ने के लिए आते है। इसका नाम भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा था। इस विश्वविद्यालय का पुस्तकालय भी बहुत बड़ा है और यहाँ हमें अनेक प्रकार की पुस्तके देखने को मिलती है।

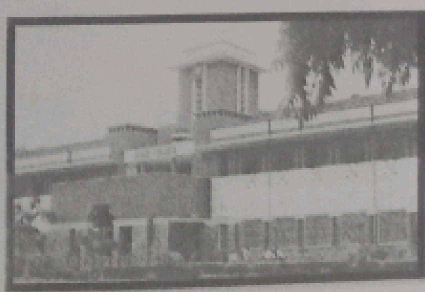

इसके पश्चात अंत में हम कुतुब मीनार गए थे। कुतुब मीनार भारत में दक्षिण दिल्ली शहर के महरौली भाग में स्थित, ईंट से बनी विश्व की सबसे ऊंची मीनार है। इसमें 379 सीढ़ियाँ है। मीनार के चारों ओर बने अहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें से अनेक इसके निर्माण काल सान 1192 के हैं। दिल्ली के अंतिम हिंदू शासक के पराजय के तत्काल बाद 1193 में कुतुबुद्धिन ऐबक द्वारा इसे 73 मीटर ऊंची विजय मीनार के रूप में निर्मित कराया गया। प्रत्येक मंजिल में एक बालकनी है। पहली तीन मंज़िले लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है और चौथी तथा पाँचवी मंज़िले मार्बल और बलुआ पत्थरों से निर्मित हैं। मीनार के निकट भारत की पहली क्वातुल-इस्लाम मस्जिद है। ऐबक से तुगलक काल तक की वास्तुकला शैली का विकास इस मीनार में स्पष्ट झलकता है। मीनार को शिलालेख से सजाया गया है और इसकी चार बालकनी है। जिसमें अलंकृत कोष्ठक बनाए गए है। कुतुब परिसर के खंडहरो में भी कुव्वत-ए-इस्लाम मस्जिद विश्व का एक भव्य मस्जिद मानी जाती है। कुतुबुद्धिन ऐबक ने 1193 में इसका निर्माण शुरू किया और 1197 में मस्जिद पूरी हो गई। इस इमारत का नाम ख़्वाजा कुतुबुद्धिन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया। लाल और हल्के पीले पत्थर से बनी इस इमारत पर कुरान की आयतें लिखी है। इसकी दीवारों पर जिन बादशाओं ने इसकी मरम्मत कराई उनका उल्लेख मिलता है।

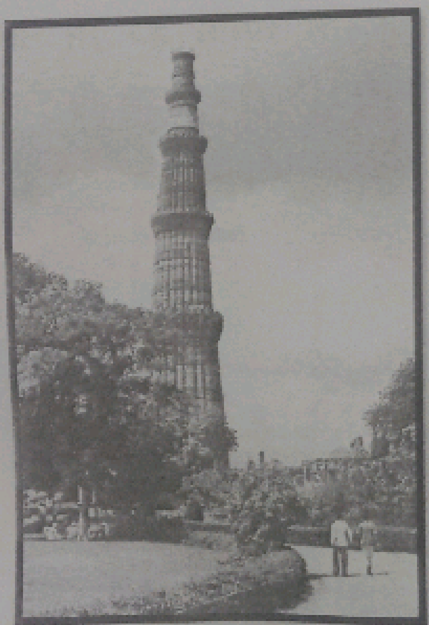

इसके बाद 23 मार्च 2024 को हम ताज महल गए थे। ताजमहल भारतीय शहर आग्रा में यमुना नदी के दक्षिण तट पर एक हाथीदांत-सफ़ेद संगमरमर का मकबरा है। इसे 1632 में मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पसंदीदा पत्नी. मुमताज़ के लिए बंधा था। मकबरा परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है और इसे तीन तरफ एक अनियंत्रित दीवार से घिरा औपचारिक उद्यान में स्थापित किया गया है। मकबरे का निर्माण अनिवार्य रूप से 1643 में पूरा किया गया था लेकिन परियोजना के अन्य चरणों का काम 10 वर्षो तक जारी रहा। ताजमहल मुगल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। इसकी वास्तु शैली फारसी, तुर्की, भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का एक अनोखा सम्मिलन है। सन 1983 में ताजमहल युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। ताजमहल को भरत की इस्लामी कला का रत्न भी घोषित किया गया है। ताजमहल के निर्माण में लगभग 22 वर्षों का समय लगा। मकबरे में चारों ओर चार मीनारें मूल आधार चौकी के चारों कोनों मेन, इमारत के दृश्य को एक चौखटे में बांधती प्रतीत होती है। मुख्य कक्ष में मुमताज़ महल एवं शाहजहाँ की नकली कब्रें है। ये खूब अलंकृत है, एवं इनकी असल निचले ताल पर स्थित है। मकबरे पर सर्वोच्च संगमरमर का गुंबद , इसका सर्वाधिक शानदार भाग है। इसका शिखर एक उलटे रखे कमल से अलंकृत है। मुख्य आधार के चारों कोनों पर चार विशाल मीनारें स्थित है। यह मीनारें मस्जिद में अजान देने हेतु बनाई जाने वाली मीनारों के समान ही बनाई गई है। पूरे क्षेत्र में कुरान की आयतें अलंकरण हेतु प्रयोग हुई हैं।

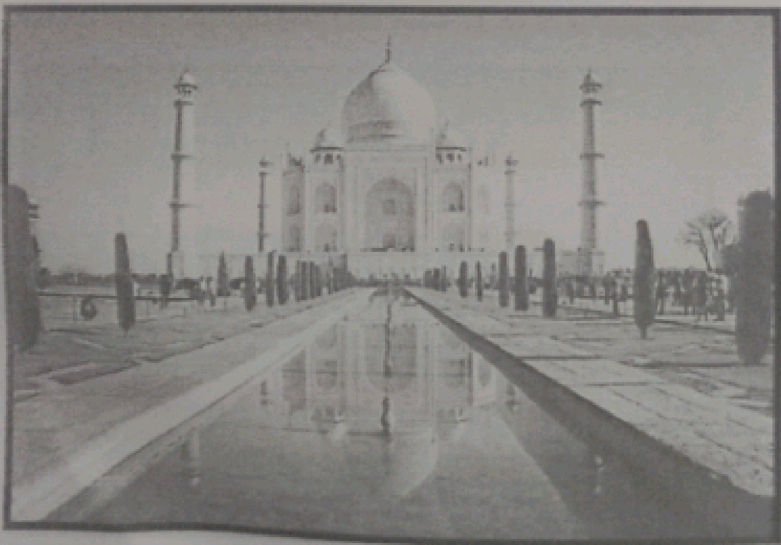

24 मार्च 2024 को हम सुबह अग्रसेन की बावली में गए थे। इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ियाँ हैं। 14वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनवाया था। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। बावड़ी की स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुगलक तथा लोदी काल से मेल खाती है। लाल बलुए पत्थर से बनी इस बावड़ी की वस्तु संबंधी विशेषताएँ तुगलक और लोदी काल की तरफ संकेत कर रहे हैं, लेकिन कहा जाता है की इस प्राचीन बावली को अग्रहरी एवं अग्रवाल समाज के पूर्वज उग्रसेन ने बनवाया था। इसमें 103 सीढ़ियाँ है। इसके बाद हम राजघाट पर गए। दिल्ली में यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर महात्मा गांधी की समधी स्थित है। काले संगमरमर से बनी इस समाधि पर उनके अंतिम शब्द 'हे राम' उद्धृत है। अब यह सुंदर उद्यान का रूप ले चुका है। यहाँ सभी ओर शांत वातावरण हमें नजर आता है। यह महात्मा गांधी का समाधि स्थल है जिसे 31 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के उपरांत बनाया गया था।

इसके बाद हम गांधी संग्रहालय, जामा मस्जिद और लाल किला गए थे। गांधी स्मृति म्यूज़ियम बिरला भवन में बना हुआ है और घनश्याम दास बिड़ला ने 1928 में इसे बनवाया था। गांधीजी के प्रेम और अहिंसा विचारों की स्थापना यहा हुई है। यह महात्मा गांधी के जीवन और सिद्धांतो को प्रदर्शित करता है। 1948 में गांधी की हत्या के तुरंत बाद उनसे जुड़ी हुई वस्तुओं को संरक्षित करने का प्रयास किया गया था। इसी स्थान पर महात्मा गांधी ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन बिताए थे और 30 जनवरी 1948 यही पर उनकी हत्या कर दी गयी थी। यहाँ गांधी जी के बचपन से लेकर अंतिम समय तक की यात्रा के बारे में हमे जानकारी प्राप्त होती है। इसके पश्चात दोपहर को हम जामा मस्जिद गए थे। यह भारत की अबसे बड़ी मस्जिदों में से एक मानी जाती है और दिल्ली के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक मानी जाती है। इस मस्जिद का निर्माण मुगल शासक शाहजहां द्वारा 1650 ई. में किया गया था। इसका निर्माण संगमरमर और लाल पत्थर से किया गया था। इसका विशाल गुंबद और सुंदर शैली के लिए यह प्रख्यात है। मस्जिद में एक मशहूर मीनार भी है। यहाँ हजारो-लाखों लोग नमाज पढ़ने आते है। जामा मस्जिद के निर्माण में कुल मिलकर 6 साल लगे थे। इसका निर्माण 1650 ई. में शुरू हुआ था और 1656 ई. में पूरा हुआ। इसके निर्माण में लगभग 5,000 मजदूरों ने काम किया था। यह भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। जामा मस्जिद के निर्माण में उच्च गुंबद और चार मीनार है, जो मस्जिद की शोभा बढ़ाता है। इसके तुरंत बाद हम लाल किला गए। दिल्ली का लाल किला न केवल वास्तुकला का एक अभूतपूर्व नमूना है बल्कि भारतीय इतिहास की कुछ सबसे अहम घटनाओं का भी गवाह है। इस भव्य इमारत को किला-ए-मुबारक जैसे कई अन्य नामों से भी जाना जाता है। लाल किला 1648 में पांचवे मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था, जब उन्होने अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करने का फैसला लिया। दिल्ली के लाल किला का स्थापत्य दरअसल आग्रा के लाल किले से प्रेरित है। हर साल भारत के आजादी के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता दिवस

पर भारत के प्रधानमंत्री किला के मुख्य दरवाजे पर तिरंगा फहराकर, राष्ट्र को संबोधित करते है। इसके बाद अंत में हम सरोजिनी नगर में गए थे।

निष्कर्ष

दिल्ली हमारे भ़ारत की राजधानी है। दिल्ली एक सुंदर, सुनहरा तथा भारत का दिल कहे जानेवाला शहर है। यह यमुना नदी के तट पर बसा है। इसे दिलवालों की दिल्ली भी कहा जाता है। दिल्ली एक ऐतिहासिक नगर है। यहाॅ अनेक प्राचीन तथा नवीन भवन एवं इमरते है। यहाँ हमें हमारी भारत के इतिहास के कई अंश मिलते है। ऐतिहासिक इमारतों में कुतुबमीनार, लाल किला, हुमायूँ का मकबरा, जामा मस्जिद आदि प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक संग्रहालय भी हमें नजर आते है जैसे की गांधी संग्रहालय। गांधीजी के स्मरणार्थ यहाँ पर राजघाट भी है जिसका निर्माण गांधी जी के मरणोपरांत किया था। दिल्ली में अनेक धार्मिक दर्शनीय स्थल है। जैसे की जामा मस्जिद, अक्षरधाम मंदिर आदि जहां पर हमें अनेक चीजे सीखने को मिलती है। दिल्ली में हमें अनेक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक जगह देखने को मिलते है । उसी के साथ हम दिल्ली के अनेक प्रकमुख विश्वविद्यालय में भी गए थे जैसे की हिन्दू कोल्लेगे, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि।